International Journal of Applied Research 2015; 1(2): 183-185

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(2): 183-185
www.allresearchjournal.com
Received: 19-11-2014
Accepted: 22-12-2014

रमा कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, कायस्थ टोला, सहरसा, बिहार,, भारत

Corresponding Author:
रमा कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, कायस्थ टोला, सहरसा, बिहार,, भारत

रेणु के रेखाचित्र

रमा कुमारी

प्रस्तावनाः

रेखाचित्र के क्षेत्र में, फणीश्वरनाथ रेणु का नाम भी उल्लेखनीय है। यद्यपि इनकी रचनाओं के बिखरे होने के कारण अब तक इतिहासकारों का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट नहीं हुआ है। भारत यायावर के संपादकत्व में उनके रेखाचित्रों का संकलन 'वनतुलसी की गंध' के नाम से सन् 1984 ई० में प्रकाशित हुआ। इसमें सत्रह रेखाचित्र संग्रहीत है। हिन्दी, बांग्ला, उर्दू तथा नेपाल के साहित्यकारों पर तथा साधारण व्यक्तियों पर आधारित इन रेखाचित्रों का तेवर हिन्दी के अन्य 'रेखाचित्रकारों' से अलग है। शिल्पगत वैविध्य तो देखने लायक है। रेणु यहाँ भी नए प्रयोग तथा अपनी सर्जक कल्पना का उपयोग करते चलते हैं। इनके रेखाचित्र सभी कोटि के हैं, पर कुछ निश्चित तौर पर उच्च कोटि के हैं। रेणु के रेखाचित्र का समुचित मूल्यांकन अभी शेष है।

सन् 1956 ई० से सन् 1979 ई० के बीच रेणु ने अपने रेखाचित्रों की रचना की थी, जो विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में बिखरे हुए हैं। गद्य की अन्य विधाओं की भाँति रेणु ने रेखाचित्र पर भी सचेत भाव से कलम चलायी थी, बल्कि उनका एक स्केच 'भिम्मल मामा' तो रेखाचित्रों की संरचना पर ही आधारित है। अब तक रेणु के सत्रह रेखाचित्र उपलब्ध हो चुके हैं, जिनमें अधिकतर तो हिन्दी और हिन्दीतर साहित्यकारों पर हैं तथा कुछ सामान्य व्यक्तियों पर। एक–आध रेखाचित्र को छोड़कर, जैसे 'भिम्मल मामा' और 'स्टिल लाइफ', अधिकतर रेखाचित्र रेणु ने सत्तर के दशक में लिखे हैं। यह वह समय था जब रेणु रचनाकार के रूप में काफी प्रतिष्ठित हो चुके थे। यह एक तथ्य है कि रेखाचित्र, रिपोर्ताज व संस्मरण प्रतिष्ठित लेखकों द्वारा ही लिखे जाते हैं। दूसरे से प्रभावित होना और दूसरों को प्रभावित करना, मानवमात्र के लिए ये दोनों की बाते सहज–स्वाभाविक हैं। रेखाचित्र मनुष्य की इसी प्रवृत्ति की देन है।

विषय–वस्तु की दृष्टि से रेखाचित्र में अधिक वैविध्य की गुजाइश नहीं है। रेखाचित्र मूलतः मानव–चरित्र को लेकर चलता है, सामाजिक, राजनीतिक परिवेश यहाँ अधिकतर गौण ही रहते हैं, किन्तु जीवनी या संस्मरण की भाँति रेखाचित्र में मनुष्य की महत्ता का गुणगान नहीं होता, महत्वपूर्ण व्यक्तियों के चरित्र में छिपे हुए छोटे–मोटे मानवीय तत्वों को उभारना इसका उद्देश्य होता है। अपने इस मानवतावादी फलक के कारण यह महापुरूषों, साहित्यकारों आदि के साथ जीवन–संघर्ष में पल–पल जूझने, हारने–जीतने वाले साधारण जन का चित्रण ही अधिक करता है। बल्कि ऐसे रेखाचित्र ही अधिक सफल हुए हैं। रेणु का समूचा साहित्य की अति साधारण कहे जाने वाले चरित्रों के हास–रूदन, आशा–आकांक्षा, जय–पराजय की गाथा है। किन्तु जहाँतक रेखाचित्रों का सम्बन्ध है, साधारण चरित्रों पर रेणु के रेखाचित्र संख्या में अत्यन्त सीमित हैं। पहली दृष्टि में यह कुछ अटपटा–सा लगता है, पर देखा जाए तो इसमें अस्वाभाविक कुछ भी नहीं है। इसके पीछे कारण यह है कि रेणु ने अपनी गद्य रचनाओं – उपन्यासों, कहानियों के अधिकतर पात्र यथार्थ जीवन से ही लिये हैं। ये पात्र उनकी रचनाओं में बिल्कुल अपने मूल रूप में, केवल छद्म नाम के साथ उपस्थित हैं। अतः रेखाचित्रों के लिए रेणु के पास कुछ शेष नहीं रह जाता है। रेणु के रेखाचित्रों का दूसरा वर्ग साहितयकारों का हैं इसमें हिन्दी के अलावा बांग्ला तथा उर्दू के भी साहित्यकार हैं बस रेणु के रेखाचित्र यहीं तक सीमित है। राजनीतिज्ञों, समाज–सुधारकों आदि पर रेणु ने कलम नहीं चलायी है। रेणु के रेखाचित्रों को इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है – (क) हिन्दी साहित्यकारों पर लिखे रेखाचित्र, (ख) हिन्दीतर साहित्यकारों पर लिखे रेखाचित्र, (ग) सामान्य चरित्रों पर लिखे रेखाचित्र।

हिन्दी साहित्यकारों पर रेणु के लिखे सात स्केच मिलते हैं। 1960 ई० में दिल्ली के विज्ञान भवन में होने वाले एशियाई लेखक सम्मेलन में भाग लेने के बाद रेणु के नई कहानियाँ (1964 ई०) मई, जून, जुलाई, अगस्त तथा सितम्बर के अंकों में क्रम से पाँच स्केच प्रकाशित हुए थे। ये रेखाचित्र क्रमशः यथपाल, अज्ञेय, उपेन्द्रनाथ अश्क, जैनेन्द्र तथा उग्र पर हैं। ये रेणु के ही समकालीन तथा वरिष्ठ लेखक थे। इसके अतिरिक्त कामता प्रसाद सिंह'काम' तथा त्रिलोचन पर भी उनके रेखाचित्र हैं।

'काम' पर लिखा रेखाचित्र 'कामता स्मृति ग्रंथ; में संग्रहीत है, जिसका प्रकाशन 1968 ई० में हुआ था। 'स्थापना' के 1970 ई० के सितम्बर अंक में त्रिलोचन पर लिखा उनका लेख प्रकाशित हुआ था।

सन् 1960 ई० में दिल्ली में एशियाई लेखक सम्मेलन हुआ था, जिसमें भारत तथा दिल्ली के कई महत्वपूर्ण साहित्यकारों ने भाग लिया था। रेणु भी उसमें शामिल होने दिल्ली पहुँचे थे। वहाँ इन लेखकों से उनकी मुलाकात हुई थी तथा वापस लौटकर अपने मन पर पड़े इन प्रभावों को शब्दबद्ध किया। इस आवेशपूर्ण माहौल में जिन दो साहित्यकारों के चेहरे तमतमाये हुए थे, लेकिन एक व्यक्ति था, जो निर्विकार भाव से अपने कैमरे के 'व्यूफाइण्डर' में अपनी पत्नी को देख रहा था। यह चेहरा यशपाल का था। यशपाल– जिनका नाम आते ही रेणु की आँखों के सामने 'प्रताप', 'सैनिक', 'हिन्दू', 'पंच', 'चाँद', आदि विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं के पृष्ठ घूम जाते हैं। यशपाल– जो लेखक के मन में क्रान्तिकारी, कथाकार, सोशलिस्ट, कम्यूनिस्ट, आर्टिस्ट, फेलोट्रेवलर, प्रगतिशील, मानवतावादी आदि विभिन्न रूपों में उपस्थित है और जिसके क्रान्तिकारी व्यक्तित्व तथा कहानियों से लेखक अभिभूत–सा है, वही शशपाल जब लेखक की आँखों के सामने खड़ा हो जाता है – ''क्षमा कीजिए .... आप रेणु जी हैं न ? मेरा नाम यशपाल है'[1] तो लेखक गूँगा–सा रह जाता है। रेणु की कल्पना के यशपाल तो सिगार पीते थे, पर यह यशपाल तो सिगरेट पीता है। रेणु को लगता है कि यशपाल जरूर राजनीति की चर्चा छेड़ेंगे, पर उसे आश्चर्य होता है। यशपाल चाय पीते हुए चाय की ही चर्चा करते हैं और सिगरेट पीते हुए तम्बाकू की ही। इससे पहले रेणु ने यशपाल के उस व्यक्तित्व की चर्चा की है जो कई प्रकार के विवादों को जन्म देता हैं कोई उन्हें रिएक्शनरी मानता है कोई कम्युनिस्ट, कोई यथार्थवादी तो कोई कुछ। पर वास्तविकता में रेणु यशपाल को उतना ही सामान्य, तटस्थ व शान्त पाते हें और उसके बाद रेणु अज्ञेय की चर्चा करते हैं। रेणु के शब्दों में – ''अलख, अगम, अगोचर, अजब, अज्ञेय।''[2] अज्ञेय से रेणु का प्रथम परिचय 'विशाल भारत' में प्रकाशित होने वाली कहानियों से होता है। इसके पूर्व तो 'मर्यादा' में लेखक ने प्रेमचन्द की कहानियाँ पढ़ी थीं–सीधी–सादी–सरल। उन कहानियों की सादगी से तो इन कहानियों का कोई तालमेल ही नहीं बैठता। कहाँ तो उन कहानियों के पात्र, एकदम जाने–पहचाने, अपने आस–पास बिखरे हुए और कहाँ इन कहानियों का पात्र। 'सत्य', ऐसा आदमी कभी देखा नहीं। इन कहानियों के तो शब्दों तक का वह ठीक से उच्चारण नहीं कर पाता। पर ये कहानियाँ उनके मन पर एक अव्यक्त प्रभाव छोड़ती जरूर है। कहीं भी कथा–चित्र धुँधला नहीं मालूम पड़ता। लेखक का किशोर मन इन कहानियों के लिए ललचता रहता है, पर लेखक के छद्म नाम से उसे कोफ्त होती है।

आगे चलकर लेखक को पता चलता है कि 'विशाल भारत' का छद्म नामधारी लेखकर गीत भी लिखता है। गीत की ध्वन्यात्मकता लेखक को अत्यन्त आकृष्ट करती है और वह उसे मृदंग की ध्वनि के साथ गाता है।

लेखक क्रमशः किशोरावस्था पार कर युवा होता है। 1943 ई० में नजरबन्द होकर भागलपुर सेन्ट्रल जेल जाता है। वहाँ उसी लेखक का उपन्यास उसके हाथ आता है – 'शेखर : एक जीवनी' और लेखक का पूरा नाम ज्ञात होता है – 'सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन'। सत्य जहाँ यहाँ शेखर नाम से उसे मिलता है। ज्ञात होता है कि अज्ञेय नाम का ही वह लेखक पूर्वी फ्रण्ट पर 'वार' में भाग लेने गया हुआ है। लेखक प्रतीक्षा करता है कि 'सत्य' या 'शेखर' लौटकर अब उसे पूर्वी प्रदेश का जादू सुनाएगा।

यात्रा–कथा पढ़ते हुए लेखक को अफसोस रह जाता है कि अज्ञेय सिलीगुड़ी से कोलकाता की तरफ न मुड़कर उसके पूर्णिया की तरफ मुड़ गया होता तो उसका प्रदेश भी हिन्दी में अमर हो जाता। फिर एशियाई लेखक सम्मेलन में रेणु की मुलाकात अज्ञेय से होती है – ''भूली–खायी चीज को खोज रहा था कि एक मीठी मुस्कान के साथ सत् चित सज्जन सामने आये, नमस्कार ! मैं अज्ञेय हूँ।[3] लेखक को लगता है कि धन्य हैं वे लोग, जो अज्ञेय के साथ जा रहे हैं। लेखक को बांग्ला में यात्रा–कथा लिखने वाले मनोज बसु तथा 'शनिवारेर चिठि' के संपादक सजनीकान्त दास की कहानी याद आ जाती है, और फिर उस सम्मेलन की तस्वीरों में लेखक को उस 'अज्ञेय' लेखक की दबी–छिपी तस्वीर भी नहीं मिल पाती। वह चुपचाप निरीक्षण करता है। अज्ञेय के भाषण के दौरान नेपाली लेखकों की प्रतिक्रिया और गोपाल हलदार की मुद्रा ....। उसके दृष्टि पटल पर अंकित हो जाता है – ''उतने तमतमाये हुए चेहरों के बीच, बहुत थोड़ी निर्विकार मूर्त्तियों को देखा। उसमें एक यशपाल का चेहरा है, दूसरा अज्ञेय का।''[4]

तब एक बार फिर वह शब्दों में उस समूचे व्यक्तित्व का एक खाका खींच देता है – ''महन्त, चक्राधिपति, पादरी, पुरोहित, डिक्टेटर, हिपोक्रेट, केलिफोर्नियन, आडू खानेवाला ... अदृश्य, अलख..... अकेला.... लेखक.... अज्ञेय।''[5]

इस रेखाचित्र के दौरान रेणु ने बार–बार अपने को 'पाठकराम' कहा है। एक अदना–सा पाठक की तरह वह अज्ञेय की रचनाओं से प्रभावित ही नहीं, अभिभूत होता है और उनके दर्शन कर अपने को धन्य समझता है। कहीं भी अपने–आप को स्थापित करने का प्रयत्न नहीं हैं जहाँ कहीं भी रेणु है, अप्रत्यक्ष रूप से है और लेखक को यही अप्रत्यक्ष उपस्थिति किसी रेखाचित्र की बहुत बड़ी विशेषता हो सकती है।

इसके बाद 'नई कहानियों' के जुलाई अंक में उपेन्द्रनाथ 'अश्क' की चर्चा है। उपेन्द्रनाथ 'अश्क' को रेणु ने अपने गाँव के एक व्यक्ति 'भिम्मल मामा' के माध्यम से प्रस्तुत किया है और उसके मध्य कहीं–कहीं चुपचाप अपने–आपको रख दिया है, थोड़े–से संकेतों के साथ, जो अश्क के साथ रेणु के गहरे लगाव को व्यंजित करते हैं। भिम्मल मामा जैसे लोगों का अश्क के प्रति लगाव एक कथाकार के रूप में अश्क की लोकप्रियता को रेखांकित करता है। यही नहीं, गद्य की विविध विधाओं पर एक साथ और इतने अधिकारपूर्वक कलम चलानेवाले भी हैं अश्क। कहते हैं – ''जब मेरा लेखक कविता, कहानी, नाटक, एकांकी, संस्मरण, यात्रा–विवरण सबकुछ लिखता है तो दूसरे लेखक की चीज क्यों पढ़ें ....?[6] साथ ही कौशल्या अश्क के कुछ उद्धरण भी भिम्मल मामा सुनाते हैं, जो अश्क की जिन्दादिली का परिचय देते हैं। सिर्फ लिखने का ही नहीं, खेलने का भी शौक था और हॉकी बड़े प्रेम से खेला करते थे। इसके साथ ही बैंगन के भुर्त्ता वाली घटना का भी उल्लेख है, जो अश्क के मस्तमौलापन को दर्शाती है। यही मस्तमौला, जिन्दादिल इंसान जब यक्ष्मा से पीड़ित हो जाता है तो भिम्मल मामा की आँखें भर आती है।

अबतक इस रेखाचित्र में रेणु लगभग अनुपस्थित ही थे। अश्क की बीमारी रेणु को मानसिक धरातल पर भी उनके साथ जोड़ देती है। रेणु को अश्क के स्वास्थ्य की चिन्ता मन–ही–मन सालती रही है और जब एक दिन वह स्वयं बीमार पड़ जाता है तो खून की कै करते हुए उसके मस्तिष्क और जुबान पर अश्क की कहानियाँ व उसके पात्र ही हैं। अस्पताल में भी भिम्मल मामा के पत्रों द्वारा वह अश्क की कृतियों की खबर रखे रहता है।

सन् 1953–54 ई० में पटना में अश्क के साथ रेणु की थोड़ी देर की मुलाकात होती है। स्वयं रेणु के शब्दों में – ''किन्तु पाँच ही मिनट में स्वास्थ्य, साहित्य और संसार के सभी प्रश्नों को हँसी–ठहाके में उड़ाकर चले गए।[7]

कोई अश्क को अवसरवादी कहता है, कोई कुछ, लेकिन इसे उनके शत्रु भी स्वीकार करते हैं कि अश्क के बिना ''बड़ा फीका हो जाएगा यहाँ का साहित्यिक समाज।''[8]

अश्क की कहानियों की यथार्थता, जो उन्हें अति साधारण लोगों के मध्य भी लोकप्रिय बना देती है, उनकी जिन्दादिली, उनकी

मस्ती, उनकी सक्रियता और हमेशा कुछ–न–कुछ हलचल पैदा करते रहने की आदत, यह सब अश्क को हिन्दी लेखकों के मध्य एक अलग पहचान देती है और विविध 'स्नैप्स' के जरिए रेणु ने अपने इस रेखाचित्र में अश्क के इसी पहलू को व्यक्त करने का प्रयत्न किया है।

कथाकार जैनेन्द्र के चरित्र की गूढ़ता व बारीकियों को रेणु ने उन्हीं की कहानियों तथा उनके पात्रों के माध्यम से समझने का यत्न किया है। इस रेखाचित्र में रेणु का व्यक्तित्व अन्य रेखाचित्रों की अपेक्षा कुछ अधिक व्याप्त हैं इस रेखाचित्र का आरम्भ जैनेन्द्र की कहानी ''फाँसी' के प्रमुख पात्र शमशेर व जुलैका की चर्चा से होता है। इस कहानी का प्रभाव रेणु पर इतना अधिक है कि उनके लिए कवि शमशेर व पात्र शमशेर में फर्क करना मुश्किल हो जाता है। यहाँ तक कि शमशेर की कविताओं को पढ़ते हुए भी 'फाँसी' की पात्रा जुलैका की याद आती है। जैनेन्द्र की प्रेम कहानियाँ शरत्चन्द्र की याद दिला जाती है। शरत्चन्द्र के 'देवदास' व 'पार्वती' का प्रभाव रेणु जैनेन्द्र की 'उर्मिला' तथा 'दीनानाथ' में पाते हैं और उनकी आँखों के सामने देवदास–पार्वती, दीनानाथ–उर्मिला क्रमशः फेड आउट हो जाते हैं। जैनेन्द्र की रचनाएँ लेखक को हीगल पद्धति की भी याद दिला देती है। जैनेन्द्र को तो उनकी कहानियों के पात्रों में ही तलाशना होगा। जैनेन्द्र के अगूढ़, अबूझ, दार्शनिक व्यक्तित्व को रेणु जैनेन्द्र के ही शब्दों में देते हैं जो जैनेन्द्र ने अपने उपन्यास 'जयवर्द्धन' की भूमिका में लिखे हैं, केवल 'पुस्तक' शब्द की जगह रेणु ने 'रेखाचित्र' शब्द रख दिया है – ''शायद यह रेखाचित्र धृष्टता हो। मैं मोहमुक्त नहीं हूँ। इस दुनिया का कुछ चाहना पाप है। पर चाह से एकदम छुट्टी कहाँ। और जो लक्ष्य के अनुगत है, वह चाह कर्त्तव्य भी हो जाता है। सो जो हो, यह रेखाचित्र सामने आने का साहस मुझमें बना रहा है।''[9]

रेणु ने अधिक रेखाचित्र तो हिन्दी और हिन्दीतर साहित्यकारों पर लिखे हैं। कुछ रेखाचित्र उन्होंने सामान्य व्यक्तियों पर भी लिखे हैं। 'वनतुलसी की गंध' उनके रेखाचित्रों का संकलन है, जिसका प्रकाशन सन् 1984 ई० में हुआ। इसके संपादक भारत यायावर हैं।

रेणु अपने रेखाचित्रों में पहले वातावरण की सृष्टि करते हैं। इसके पश्चात वे उस वातावरण में व्यक्ति को रखकर चमत्कार उत्पन्न कर देते हैं। रेखाचित्र को विश्लेषित करते हुए यह कहा जाता है कि ये रिपोर्ताजों की गत्यात्मकता के विपरीत स्थिरता लिए हुए होते हैं। रेणु के रेखाचित्र इस दृष्टि से बिल्कुल अलग हैं। वे अपने रेखाचित्रों में किसी भी स्थिति की विषमता को समझने के लिए चुपचाप एक विपरीत बिन्दु रख देते हैं और सबकुछ एकबारगी स्पष्ट हो उठता है। उनके रेखाचित्रों में भी रिपोर्ताजों की गत्यात्मकता पायी जाती है। उनकी यही विशेषता उन्हें सबसे अलग खड़ा कर देती है। अपने रेखाचित्र में वे विस्तार की ओर नहीं बढ़ते। अत्यन्त बारीकियों से विविध पहलुओं को उभारने की अपेक्षा वे व्यक्ति के किसी एक पक्ष को ही चित्रित करते हैं। उनके अधिकतर रेखाचित्र वातावरण प्रधान हैं। अपनी जमीन, अपनी धरती से गहरा लगाव, नेपाल से लगाव, पटना के कॉफी–हाउस, सड़कें, दुकानें, गाँव की जमीन, जेल सबकुछ उनके रेखाचित्रों में यत्र–तत्र बिखरे पड़े हैं।

सन्दर्भ :–

1. रेणु रचनावली, भाग – 5, पृष्ठ – 34
2. वही, भाग – 5, पृष्ठ – 35
3. वही, भाग – 5, पृष्ठ – 39
4. वही, भाग – 5, पृष्ठ – 39
5. वही, भाग – 5, पृष्ठ – 40
6. वही, भाग – 5, पृष्ठ – 42
7. वही, भाग – 5, पृष्ठ – 45
8. वही, भाग – 5, पृष्ठ – 47
9. वही, भाग – 5, पृष्ठ – 52